P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ख्याल गायन की बन्दिशों में भाव : एक अध्ययन

अंकू सिंह
शोधार्थिनी,
संगीत विभाग,
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान में ख्याल गायन ऐसा एक सशक्त सांगीतिक माध्यम है जिसके द्वारा गायक न केवल राग को प्रस्तुत करता है अपितु ख्याल गायन में साहित्य के द्वारा अर्थात बंदिशों के द्वारा भाव का भी प्रदर्शन करता है यद्यपि भाव प्रधान अन्य गायन शैलियाँ भी हैं किन्तु ख्याल गायन एक ऐसी विधा है जिसमें राग का शुद्ध रूप समाहित रहता है तथा भावों का प्रस्तुतीकरण भी सौन्दर्यपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में रागो की बंदिशों में निहित .. को विभिन्न प्रकार से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : ख्याल, प्रत्यय, बंदिश, भाव, अध्ययन।

प्रस्तावना

ख्याल गायन शैली हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन विधाओं में से एक है। इस गायन शैली में राग प्रयोग, रचना कौशल, तथा सृजनात्मकता के साथ–साथ भाव पूर्ण अभिव्यक्ति भी होती है। यूँ तो प्रत्येक राग की अपनी प्रकृति एवं अपनी सम्प्रेषणता होती है किन्तु ख्याल गायन में यही भाव–सम्प्रेषणता और अधिक मुखर हो जाती है। भाव का सीधा सम्बन्ध रस से माना गया है तथा रस का प्रयुक्तिकरण गायन विधाओं में से ख्याल गायन में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ख्याल गायन की ऐतिहासिकता जानना,
2. बंदिश का अवलोकन तथा अध्ययन करना,
3. ख्याल गायन में निहित सौन्दर्यात्मक तत्व खोजना,
4. ख्याल गायन में भाव अवलोकन एवं निरीक्षण करना।

विषय विस्तार

गायन के लिये हमें गेय पदों की आवश्यकता पड़ती है। वे गेय पद साहित्य कहे जाते हैं। सच्चा संगीत वही है जो स्वरों के साथ–साथ काव्य के भावों को उजागर करने में सहायक हो, गायन में तो यह अत्यन्त अपेक्षित है। अच्छी से अच्छी कविता साधारण ढंग से पढ़ने में प्रभावोत्पादक नहीं होती। किंतु जब उसमें संगीत का सम्बल दिया जाता है तब उसका सौंदर्य मुखरित होने लगता है। संगीत में अनेक गीत शैलियाँ प्रचलित है। यदि भिन्न–भिन्न गेय पदों की रचना साहित्य में न की गई होती तो संगीत में भिन्न–भिन्न गीत शैलियाँ देखने को न मिलती। जब स्वर से उत्पन्न भाव अथवा रस काव्य के उत्पन्न भाव अथवा रस से मिल जाते हैं तो संगीतज्ञ अथवा श्रोता दोनों का हृदय रसाप्लावित हो जाता है तभी राग मुखरित होकर अपनी रंजकता और रोचकता को सार्थक बनाने में सफल होता है।

काव्य न केवल संगीत का आवश्यक घटक है अपितु संगीत में भाव निश्चितता काव्य के द्वारा ही संभव है। कविता मनोवेगपूर्ण और संगीतमय भाषा में मानव अतःकरण की मूर्त तथा कलात्मक व्यंजना करती है। जिस प्रकार निश्चित आन्दोलन संख्या तथा श्रुतियों के गठन से मधुर स्वर की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार नियमित ध्वनि–प्रकम्पनों तथा वर्णों के आधार पर मधुर छंद और मधुर अर्थ तथा काव्य की उत्पत्ति होती है। वास्तव में रसालंकारयुक्त काव्य, स्वर,ताल एवं लय से आबद्ध रचना को मधुरतम संगीत कहा जा सकता है। अतः उत्कृष्ट संगीत के लिए शिष्ट और सरस एवं ललित काव्य की आवश्यकता होती है। काव्य में जहाँ सार्थक पदों का ही प्रयोग किया जाता है, वही संगीत में सार्थक के साथ निरर्थक पदों का भी प्रयोग प्रचलित है। जब कलाकार अपनी सूझबूझ कल्पनाशीलता से काव्य का पुनः–पुनः नवीनीकरण करता है तो यही चिंतन जितना गायन, वादन एवं नृत्य की समस्त रचनाओं में नवीनीकरण द्वारा सम्भव है उतना किसी अन्य विधा में नही। संगीत का सफल कलाकार काव्य में निहित भावों को इस प्रकार गूँथता, सँवारता व अलंकृत करता है कि इन उपादानों से नवनिर्मित रचना श्रोताओं को आनन्द प्रदान करती है। प्रत्येक भाव

में कोई न कोई रस अवश्य विद्यमान होता है। इस प्रकार संगीत के काव्य में रसानुभूति कराने की क्षमता विद्यमान है। प्रत्येक काव्य में निहित भाव से रस की निष्पति होती है। काव्य और संगीत में भावानुरूप शब्दों और स्वरों का प्रयोग होता है। जिस प्रकार काव्य मे ं भावानुरूप, मधुर, कोमल य कर्कश शब्दावली तथा छन्दादि का प्रयोग होता है उसी प्रकार संगीत में भावानुरूप गीत तथा राग के स्वरों को ग्रहण किया जाता है। संगीत में प्रेमभावना की अभिव्यक्ति में यमन, बागेश्री, भीमपलासी तथा भक्तिभाव की अभिव्यंजना में तोड़ी, भैरव, बिलावल आदि रागों की योजना की जाती है। गायन में जो छंद प्रयुक्त होता है वह तुकांत होता है उसके शब्द में कला का कौशल पूर्ण संयोजन होता है।

साधारणतया यह देखा गाय है कि कोमल स्वरों वाले राग भक्ति भावना, करूणा, विनय, दया सूचक होते है फिर उन रागों में जाति विशेष का अर्थ नहीं रहता क्योंकि कोमल स्वरों की प्रकृति भी कोमल ही होती है अतः चिंतनशील रचनाकार अथवा गायक विनय, वियोग, दया इत्यादि के भावों को दर्शाने के लिए उचित साहित्य का प्रयोग करते है। जिसमें ये सभी तत्व विद्यमान हो। दूसरी ओर साहित्य को देख कर भी रचनाओं का निर्माण होता है। जहाँ साहित्य पहले से विद्यमान होता है वहाँ साहित्य के अनुरूप राग का चयन किया जाता है आगरा घराने के मूर्धन्य कलाकार, विद्वान, गायक इस तथ्य का पैनी दृष्टि से आंकलन करते थे कि तथ्य ख्याल रचनाओं में राग के अनुसार साहित्य हो उदाहरणार्थ राग जोग में विलम्बित ख्याल इस प्रकार है जिसमें राग एवं भाव के अनुसार साहित्य का प्रयोग हुआ है–

राग जोग (विलम्बित ख्याल)

स्थाई

पियरवा को बिरमाये
बिरहिन अति दुख पाये

अंतरा

कौन सी भूल भयी
जो पति दरश छिपाये

इन पंक्तियों में शब्दों का संयोजन तुकांत हुआ है जैसे– बिरमाये, दुखपाये, दरश छिपाये। साहित्य के साथ–साथ संगीतात्मक प्रयोगों, राग–प्रयोगो व भाव को स्पष्ट करती हुई विलम्बित ख्याल की बंदिश प्रस्तुत हैं–

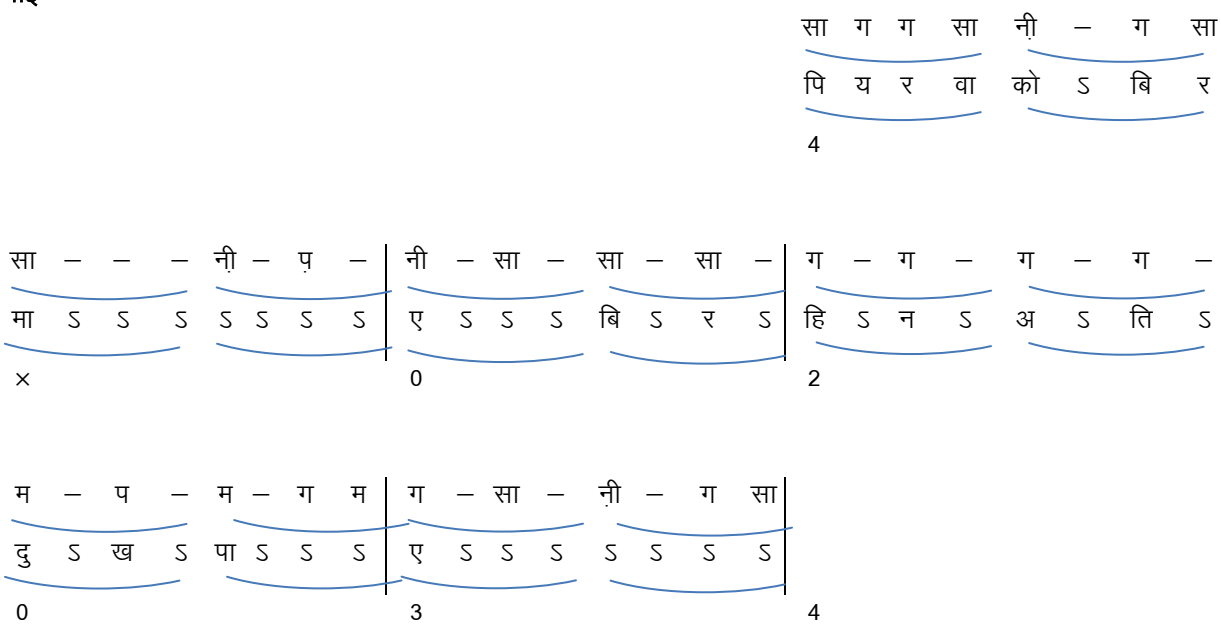

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अन्तरा

					ग म प नी	सां सां सां सां
					कौ ऽ न सी	भू ऽ ल भ
					4	
गंनी– सां–	नी सां नी प	ग –म गम	ग–सा –	सा –––	ग – ग –	
ईऽ ऽ ऽ ऽ	मो ऽ सो ऽ	आ ऽऽ ऽऽ	ली ऽ ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ	प ऽ ती ऽ	
×		0		2		
ग – ग –	म – प –	म – ग म	ग – सा –			
द ऽ र ऽ	स ऽ छि ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ			
0		3		4		

इसी प्रकार द्रुत ख्याल की बंदिश का साहित्य व स्वरलिपि उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

स्थाई

साजन मोरे घर आवे
मन मेरो अति सुख पाये

अंतरा

मंगल गावो चौक पुरावो
प्रेम पिया हम पाये

राग जोग (द्रुत ख्याल)

स्थाई

								–	म	ग	सा	नि	नि	ग	सा
								–	सा	ज	न	मो	रे	घ	र
								0				3			
सा	–	सा	–	प	नि़	सा	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म	प
आ	ऽ	ये	–	आ	ऽ	ए	ऽ	मे	रो	म	न	अ	ति	सु	ख
×				2				0				3			
म	–	ग	म	स	ग	नि	स								
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	यें	ऽ								
×				2											

अन्तरा

								–ग	म	प	नि	सां	–	सां	–
								मं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ
								0				3			
नि	सां	नि	प	म	(प)	म	ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	म	प
चौं	ऽ	क	पु	रा	ऽ	वो	ऽ	प्रे	ऽ	म	पि	या	ऽ	ह	म
×				2				0				3			
म	–	ग	म	सा	ग	नि	सा								
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ये	ऽ								
×				2											

इन शब्दों में काव्य का तुकांत प्रयोग हुआ है जैसे घर आवे, सुख पाये, हम पाये। साहित्य की तुकांत रचनाशीलता के साथ–साथ जब गायक कलाकार राग में विभिन्न स्वर प्रयोगों का चिंतन करके अभ्यास के द्वारा भाव की पुष्टि करता है एवं राग के नियमों में बद्ध रचना से रसानुभूति करता है। प्रस्तुत दोनों बन्दिशों में वियोग श्रृंगार तथा करूण रस का आधारभूत प्रयोग हुआ है।

ग म ग स, नि़ प़निग स, गनि़ स

इन प्रमुख स्वर प्रयोगों से राग जोग की अत्यन्त रसपूर्ण अभिव्यक्ति होती है तथा बंदिशों का काव्य भी उपयुक्त प्रतीत होता है। गायक अपनी रचनाशीलता से विभिन्न रागों, बन्दिशों तथा स्वर लहरियों में रस की उत्पत्ति करता है। पहले तो अपनी अभिव्यक्ति से स्वयं रस द्वारा पोषित करता है तथा श्रोताओं को भी पोषित करता है। जैसा कि विदित ही है कि साहित्य में 9 प्रकार के रस माने गये है तथा भरतमुनि मे रस की उत्पत्ति इस प्रकार बताई है–

विभावानुभावसंचारीभावसंयोगादृश्यनिष्पति सत्य ही है कि मनुष्य अपने भावों, अनुभावों, संचारी भावों के द्वारा रस का अनुभव करता है तथा संगीत में तो रस के लिये किसी बाहरी पदार्थ की आवश्यकता नही होती संगीतकार तो स्वयं ही स्वरो द्वारा प्रेरित भावों एवं अनुभावों को अनुभव करने लगता है तथा शनैः शनैः वह स्वयं रसमय हो जाता है तथा उसका संगीत भी रसमय हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि संगीत में एक गायक न केवल किसी एक राग को प्रस्तुत करता है अपितु वह अपनी रचनात्मकता, कल्पना तथा सृजन का परिचय देते हुये एक गायक, कवि तथा एक दार्शनिक होने का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भले ही अन्य गायन शैलियों में भाव प्रक्षेपण होता हो किन्तु ख्याल गायन में ही बंदिश के साहित्य के द्वारा तथा ख्याल गायन के सौन्दर्यात्मक तत्वों के द्वारा भाव का प्रयोग निरन्तर होता रहता है। वस्तुतः किसी भी गायन–वादन शैली में भाव का विचार, प्रयोग अथवा संकल्पना गायक या वादक की अपनी सूझबूझ पर निर्भर करता है साथ–साथ उस गायन शैली में प्रयुक्त शिक्षा, दीक्षा, अध्ययन, अभ्यास, विचारशील श्रृजनात्मकता का भी बहुत बड़ा योगदान होता है।

सन्दर्भ सूची

1. *मिश्र शंकरलाल सुभरंग, नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन चण्डीगढ़ संस्करण 1998*
2. *सिंह डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'– संगीत सम्प्रति कनिष्क पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम संस्करण– 2016*
3. *पाण्डेय डॉ अमिता "ख्याल गायकी और भक्ति रस, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 2014*
4. *डॉ. महाजन अनुपमम– "भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र" प्रकाशक हरियाणा साहित्य उकादमी चण्डीगढ़ संस्करण 1993*
5. *गर्ग लक्ष्मी नारायण– "निबन्ध संगीत' संगीतालय हाथरस*
6. *मेहता प्रो० रमणलाल–"आगरा घराना व परम्परागत चींजे, मेहता पब्लिकेशन, बड़ौदा" 1985*
7. *वाजपेयी डॉ. शबुहन "भरतकृत नाट्यशास्त्र टीका, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली 1990"*